।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

• विक्रम संवत 2082 आश्विन शुल्क प्रतिपदा, 1-15 अक्टूबर 2025 (1-15 October 2025), • वर्ष 5 (Year-5), • अंक 11 • पृष्ठ 4 (Page-4) • मूल्य रु.2 (Price 2/-)

बिहार चुनावी रण : सीट बंटवारे पर एनडीए और महागठबंधन में सियासी घमासान

पटना : बिहार की राजनीति सचमुच उबल पड़ी। एनडीए और महागठबंधन दोनों में सीट बंटवारे को लेकर गहरी दरारें सामने आ गईं। सत्ता के दोनों खेमों में गहमागहमी, विरोध और बैठकों का दौर देर रात तक चलता रहा।

एनडीए ने दिल्ली में सीट बंटवारे का जो फार्मूला घोषित किया था, उसी ने जदयू और भाजपा के रिश्तों में खटास घोल दी। सूत्रों के अनुसार मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इस बात से नाराज हैं कि जदयू की कई परंपरागत सीटें लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास) को दे दी गईं। एक वरिष्ठ जदयू नेता ने बताया, सहमति 103 सीटें जदयू और 102 भाजपा की थी, लेकिन अब फार्मूला बदलकर 101-101 कैसे हो गया? नीतीश ने भाजपा नेताओं से कहा कि इस 'अनुचित बंटवारे' पर पुनर्विचार किया जाए।

उनकी नाराजगी खास तौर पर सोनबरसा (आरक्षित) सीट को लेकर है, जहां मौजूदा जदयू विधायक और मंत्री रत्नेश सदा का टिकट काटकर एलजेपी को टिकट दे दिया गया। देर रात नीतीश ने खुद सदा को पार्टी प्रतीक सौंपकर संकेत दिया कि वे पीछे हटने वाले नहीं। रत्नेश सदा ने कहा, 'जब पता चला कि सीट एलजेपी को दी गई है तो यकीन नहीं हुआ, लेकिन मुझे भरोसा था कि नीतीश जी मेरे साथ खड़े रहेंगे।'

दिल्ली से पटना तक सियासी हलचल– दिल्ली में हुई वार्ता जदयू नेताओं संजय झा और ललन सिंह ने संभाली थी। जब विवाद बढ़ा तो भाजपा के नितिन नवीन और विनोद तावड़े पटना पहुंचे। देर रात संजय झा के घर पर हुई बैठक बिना किसी समाधान के खत्म हो गई। भाजपा सूत्रों ने संकेत दिए कि अब गृह मंत्री अमित शाह खुद पटना आकर विवाद सुलझा सकते हैं। दिल्ली में घोषित फॉर्मूले के तहत भाजपा और जदयू को 101-101, एलजेपी को 29, जीतन राम मांझी को 'हम' और उपेंद्र कुशवाहा की आरएलडी को 6-6 सीटें दी जानी थीं। इस बीच, पूर्व मंत्री जय कुमार सिंह ने जदयू से इस्तीफा देकर नाराजगी जताई, जबकि चंद्रिका राय के समर्थकों ने देर रात टिकट की मांग को लेकर झा के आवास के बाहर प्रदर्शन किया।

महागठबंधन में भी उठी बगावत की आंच– उधर, महागठबंधन में भी स्थिति कम विस्फोटक नहीं रही। तेजस्वी यादव के करीबी भोला यादव ने आरजेडी उम्मीदवारों को पार्टी प्रतीक बांटने शुरू कर दिए थे, लेकिन जैसे ही तेजस्वी दिल्ली से लौटे, उन्होंने तुरंत सभी प्रतीक वापस करने का आदेश दिया। आरजेडी सूत्रों के अनुसार, यह फैसला राहुल गांधी के निर्देश के बाद लिया गया, जिन्होंने कहा था कि सीट बंटवारे की बातचीत पूरी होने से पहले प्रतीक बांटना अनुचित है। पहले तय प्रस्ताव में 134 सीटें आरजेडी, 54 कांग्रेस, 22 भाकपा-एमएल, 6 भाकपा, 4 माकपा, 18 वीआईपी, 2 झारखंड मुक्ति मोर्चा, 3 पशुपति पारस गुट को एलजेपी और 2 इंडियन इन्क्लूसिव पार्टी को दी जानी थीं। इधर, भाकपा-एमएल ने भी कई उम्मीदवारों को प्रतीक सौंप दिए, जिनमें कुछ वे सीटें भी शामिल थीं जिन पर पहले आरजेडी लड़ी थी। इससे महागठबंधन में असंतोष और गहराता दिख रहा है।

नई ताकतें मैदान में– इस सियासी खींचतान के बीच प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने सोमवार को 65 नए उम्मीदवारों की घोषणा की। इनमें डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, शिक्षाविद और समाजसेवी शामिल हैं। वहीं, लालू प्रसाद के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव की नई पार्टी जनशक्ति जनता दल ने भी दो प्रत्याशी घोषित किए। इसे सीधे तौर पर छोटे भाई तेजस्वी की आरजेडी को चुनौती देने के संकेत के रूप में देखा जा रहा है, खासकर क्योंकि दोनों ने यादव उम्मीदवारों को ही टिकट दिए हैं।

धनतेरस 18 या 19 अक्टूबर को? खरीदारी का शुभ समय

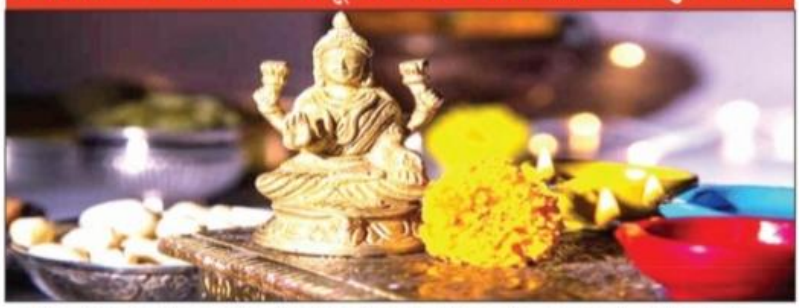

नई दिल्ली : धनतेरस 18 अक्तूबर को है या 19 अक्टूबर को इसको लेकर लोगों में संशय है। दरअसल, त्रयोदशी तिथि का आरंभ 18 अक्टूबर को दोपहर 12:18 बजे से होगा और इसका समापन 19 अक्टूबर को दोपहर 1:51 बजे पर होगा। पंडित अनिल शास्त्री के मुताबिक धनतेरस पर प्रदोष काल में पूजा का विशेष महत्व माना जाता है। इसका प्रदोष काल 18 अक्टूबर को है, इसलिए धनतेरस 18 अक्टूबर को ही मनाना शुभ होगा। प्रदोष काल में वृषभ लग्न स्थिर माना जाता है, इस लग्न में की गई लक्ष्मी पूजा से धन का स्थायी वास होता है।

धनतेरस, जिसे धनत्रयोदशी या धन्वंतरि त्रयोदशी के नाम से भी जाना जाता है, दीपावली के पांच दिवसीय महापर्व का प्रथम दिन है। यह पर्व हर वर्ष कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाता है। 'धनतेरस' शब्द 'धन' अर्थात् संपत्ति और 'तेरस' अर्थात् तेरहवें दिन से मिलकर बना है। यह दिन धन, समृद्धि और आरोग्य की प्राप्ति के लिए समर्पित है। धार्मिक मान्यता है कि समुद्र मंथन के समय भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिए इस दिन आयुर्वेद और स्वास्थ्य की आराधना का भी विशेष महत्व है।

त्रयोदशी तिथि प्रारंभ : *18 अक्टूबर दोपहर 12:18 बजे। त्रयोदशी तिथि समाप्त: 19 अक्टूबर दोपहर 1:51 बजे। पूजा मुहूर्त : शाम 7:16 से रात 8:20 बजे तक (18 अक्टूबर)। प्रदोष काल: शाम 5:39 से रात 8:14 बजे तक (18 अक्टूबर)। वृषभ काल: शाम 7:15 से रात 9:10 बजे तक।*

खरीदारी के शुभ मुहूर्त : *सुबह 7:50 से 10:00 बजे तक (वृश्चिक लग्न)। दोपहर 2:00 से 3:30 बजे तक (कुंभ लग्न)। शाम 6:36 से रात 8:32 बजे तक (प्रदोष काल)।*

धार्मिक महत्व और परंपराएं- इस दिन भगवान धन्वंतरि, माता लक्ष्मी और भगवान कुबेर की पूजा की जाती है। लोक विश्वास है कि इस दिन खरीदी गई वस्तुएं तेरह गुना बढ़ती हैं, इसलिए सोना, चांदी, बर्तन, वाहन और नई वस्तुएं खरीदना अत्यंत शुभ माना जाता है। धनतेरस की रात यम दीपम का भी विशेष महत्व है। इस दिन घर के मुख्य द्वार पर दक्षिण दिशा की ओर दीपक जलाया जाता है, जो यमराज को समर्पित होता है। यह दीया परिवार की रक्षा और दीर्घायु का प्रतीक माना गया है।

प्रशांत किशोर की पार्टी ने बिहार की 65 सीटों पर की उम्मीदवारों की घोषणा

पटना : प्रशांत किशोर के नेतृत्व वाली जन सुराज पार्टी (जसुपा) ने बिहार विधानसभा चुनाव के लिए 65 सीटों पर अपने उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी कर दी है। हालांकि, सूची में किशोर का नाम नहीं है। किशोर के राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता तेजस्वी यादव के खिलाफ राघोपुर सीट से चुनाव लड़ने की संभावना है। प्रेसवार्ता करते हुए किशोर ने कहा कि इसके साथ ही पार्टी ने कुल 116 सीटों के लिए उम्मीदवारों के नाम घोषित कर दिए हैं। पहली सूची में 51 सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा की गई थी। किशोर ने बताया कि अब तक घोषित उम्मीदवारों में 31 अत्यंत कमजोर वर्ग से, 21 अन्य पिछड़ा वर्ग से तथा 21 मुस्लिम हैं। पार्टी ने हसनौत से कमलेश पासवान को मैदान में उतारा है। यह सीट लंबे समय से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का गढ़ मानी जाती है। बाकी सीटों पर भी घोषणा जल्द की जाएगी।

हावड़ा में बनकर तैयार हो रहा है भारत का पहला तकरीबन 400 फुट की ऊंचाई पर घूमने वाला रेस्टोरेंट, कम्युनिटी हॉल और गेस्ट रूम

इसकी विशेषताएं

- टेलिस्कोप की सहायता से शहर के 20 किलोमीटर की दूरी तक लोग दृश्य को देखने का आनंद ले सकेंगे।
- डेढ़ सौ लोगों की क्षमता वाला कम्युनिटी हॉल का भी निर्माण किया गया है जहां छोटे-मोटे कार्यक्रम का आयोजन किया जा सकेगा ।
- 6 कमरों का गेस्ट रूम भी तैयार किया गया है।
- पार्क में कई तरह के अत्याधुनिक तकनीक से लैस छोटे से बड़े सभी के लिए राइडस का भी निर्माण किया जा रहा है।
- 2026 में लोगों के लिए इसे चालू कर दिया जाएगा।
- इस पार्क में प्रवेश शुल्क 100 से 200 रुपये रखने की बात की जा रही है।

हावड़ा (**वेद्यनाथ झा**) : पश्चिम बंगाल, भारत के साथ ही साथ दक्षिण एशिया के लिए यह गौरव की बात है। आपको बता दे की नॉर्थ ईस्ट के साथ-साथ भारत का पहला तकरीबन 400 फुट की ऊंचाई पर घूमने वाला रेस्टोरेंट पंचदीप टावर अब प्रय: बनकर तैयार है ,आने वाले कुछ ही महीना में इसको आम लोगों के लिए खोलने का विचार प्रकट किए हैं पांच दीप कंस्ट्रक्शन के मुखिया राम रतन चौधरी। रतन जी ने बताया कि यह हावड़ा के रिंग रोड पर स्थित है, जहां से दक्षिण पूर्व रेलवे के टिकयापारा स्टेशन से महज 100 मीटर की दूरी पर है तो हावड़ा स्टेशन और हावड़ा मैदान मेट्रो स्टेशन से प्रय: 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।यहां पर आने जाने की सुविधा उपलब्ध है आशा करता हूं कि लोगो को हावड़ा पश्चिम बंगाल के साथ ही साथ भारत और विदेशों से भी लोगों को यहां पर यह टावर अपनी ओर आकर्षित करने का कार्य करेगा। इस टावर में कई सारे अत्याधुनिक फीचर्स लगाए गए हैं, मुझे आपको बताते हुए हर्ष हो रहा है कि तकरीबन 400 फुट यानी की 40 माले की ऊंचाई मान लिया जाए तो इतनी ऊंचाई पर एक रेस्टोरेंट को बनाया गया है जहां पर भोजन की उत्तम सुविधा रहेगी। वह रेस्टोरेंट प्राय एक घंटे में एक से दो बार 360 डिग्री घूमती रहेगी इस कारण इस रेस्टोरेंट में भोजन का आनंद लेने के साथ-साथ लोग कभी द्वितीय हुगली सेतु, कभी बंगाल का मुख्य प्रशासनिक भवन नाबन्नो तो कभी ऐतिहासिक हावड़ा ब्रिज के साथ-साथ और कई सारे दृश्य का आनंद भोजन के साथ लेने का लाभ उठाएंगे। वहीं इसके साथ तकरीबन डेढ़ सौ लोगों की कैपेसिटी वाला एक कम्युनिटी हॉल भी तैयार किया गया है जहां पर छोटे-मोटे कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है लोग अपने बंधु बांधव और परिवार जनों के साथ इस कम्युनिटी हॉल में कार्यक्रम का लाभ ले सकेंगे। वहीं आपको बता दूं कि पहले शहीद मीनार या कुतुब मीनार की ऊंचाई से लोगों को शहर के दृश्य को देखने का अनुमति था लेकिन काफी वर्षों से यह बंद कर दिया गया है । आपको बता दें की शहीद मीनार हो या फिर कुतुब मीनार इससे भी ज्यादा ऊंचाई पर अब लोग पहुंच कर इस टावर से टेलिस्कोप की सहायता से 20 किलोमीटर की दूरी के दृश्यों को देख पाएंगे। लोग अपने घरों को चिन्हित कर पाएंगे, दमदम एयरपोर्ट पर हवाई जहाज के उतरने व चढ़ने का दृश्य देख सकेंगे, ग्रामीण वातावरण का भी आनंद उठा सकेंगे, ऐसी समुचित व्यवस्था यहां पर उपलब्ध कराई जा रही है। इसके साथ ही यहां पर इस पार्क में और कइ सारे छोटे बच्चों से लेकर बड़े लोगों के लिए विभिन्न तरह के राइड की भी व्यवस्था किया जा रही है, पार्क में एक तालाब है जिसका सौंदर्य करण किया जा रहा है इसमें वोटिंग की सुविधा रहेगी।इसके साथ ही अब पार्क में इन सब चीजों के सौंदर्य करण पर अब काम किया जा रहा है। आशा है कि आने वाले तीन से चार महीने के अंदर यानी की 2026 में लोगों के लिए इसे चालू किया जा सकेगा। यह हमारे हावड़ा के साथ-साथ भारत के लिए गौरव की बात है मुझे नहीं लगता कि इतनी काफी ऊंचाई पर इस तरह कि कई सारी सुविधाओं से लैस कोई टावर है ।हम लोग आने वाले दिनों में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी इसका नाम दर्ज करने का प्रयास करेंगे। इस टावर के निर्माण में सभी तरह की व्यवस्था की गई है एटीसी के द्वारा परमिशन लिया गया है। दमकल विभाग के द्वारा स्वीकृति ली गई है और जितने भी जरूरी आधिकारिक स्वीकृति होती है सभी ली गई है इसके बाद ही इसका निर्माण किया गया है तकरीबन 7 वर्ष इसके निर्माण में लगे हैं जिसमें कोविद के समय दो वर्ष काम काफी धीमी रफ्तार से हुआ है। वही इस पार्क में लोगों की एंट्री के लिए अन्य दिनों मेंछ100 की शुल्क निर्धारित की गई है और छुट्टी के दिनों में यह डेढ़ सौ से छ200 रखने की बात की जा रही है। शुक्ला को आम लोगों के हित का ख्याल रखते हुए रक्खा जा रहा है। जब इसकी टॉप की ऊंचाई से आप खुली आंखों से देखेंगे तो आपको काफी दूर का दृश्य दिखाई देगा साथ ही हवा का दबाव काफी है इस टावर में लोगों को तुरंत रेस्टोरेंट्स तक पहुंचाने के लिए दो उत्तम क्वालिटी के लिफ्ट का प्रबंध है जो कि महज 2 मिनट के अंदर ही गंतव्य तक पहुंचाएगी। सभी अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस इस टावर के साथ-साथ पार्क का भी निर्माण किया जा रहा है ताकि यहां पर आने वाले लोगो को किसी भी तरह इंजॉय करने में कहीं कुछ खामी ना रह पाए इसका ध्यान रखा जा रहा है। मैं आपको बता दूं कि जब इसकी ऊंचाई पर पहुंच कर मैंने अपनी आंखों से हावड़ा शहर को देखने का प्रयास किया तो एक अलग ही आनंद की अनुभूति हुई छोटी-छोटी रेलगाड़ियां पटरी पर सरपट दौड़ती दिखाई दे रही थी, तो कहीं लोकल ट्रेन एक ही पटरी पर दूर-दूर तक खड़ी दिखी ,छोटी-छोटी गाड़ियां सड़कों पर रेंगती नजर आ रही है। इसके साथ ही हावड़ा ब्रिज हो या द्वितीय हुगली सेतु हो या अन्य जो दार्शनिक स्थल है उन्हें भी यहां से देखा जा सकता है। सब कुछ मिला कर बोला जाए तो हावड़ा का दार्शनिक और ऐतिहासिक पंचदीप टावर अब लोगों के लिए खुलने को तैयार है।

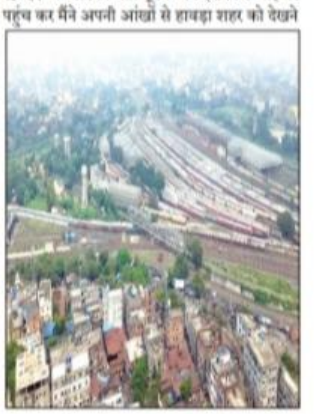

एनसीसी के सहयोग से हावड़ा मंडल ने स्वच्छता जागरूकता

कोलकाता : प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान से प्रेरित ऐतिहासिक पहल स्वच्छोत्सव के तहत पूर्व रेलवे के हावड़ा मंडल ने 2 बंगाल बटालियन, एनसीसी के सहयोग से बुधवार को हावड़ा स्टेशन पर स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम और अमृत संवाद आयोजित किया। इस आयोजन के जरिए रेल परिसरों व अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने के बारे में जागरूकता का संदेश दिया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में 2 बंगाल बटालियन, सुरेंद्रनाथ कालेज के 50 से अधिक कैडेटों ने हावड़ा स्टेशन परिसर व आसपास व्यापक सफाई अभियान चलाया। अमृत संवाद कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में हावड़ा के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) विशाल कपूर उपस्थित रहे। इस अवसर पर हावड़ा मंडल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के अलावा क्रिकेटर श्रीवत्स गोस्वामी, एनसीसी के कोलकाता-बी ग्रुप के ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर योगेश कुलकर्णी, 2 बंगाल बटालियन एनसीसी के कमांडिंग आफिसर कर्नल अविजीत दास, एसोसिएट एनसीसी अधिकारी एवं प्रोफेसर लेफ्टिनेंट डा बीथा समादार व अन्य अधिकारी एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर स्वच्छता ज़िम्मेदारी से कचरा निपटान और स्वच्छ पर्यावरण के लिए सामूहिक कार्रवाई के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एनसीसी कैडेटों द्वारा शानदार नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया गया, जो आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम में डीआरएम ने सभी लोगों से नैतिक कर्तव्य के रूप में स्वच्छता नियमों का पालन करने की अपील की। उन्होंने समाज में स्वच्छता जागरूकता के लिए एनसीसी कैडेटों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हावड़ा मंडल द्वारा स्वच्छता अभियान के तहत रेलवे स्टेशनों, कालोनियों, विश्राम कक्षों, प्रतीक्षालयों, रनिंग रूम और छात्रावासों में व्यापक सफाई अभियान चलाए जा रहे हैं। रेलवे परिसरों में वृक्षारोपण और भू-दृश्यीकरण के माध्यम से सौंदर्यीकरण के प्रयास भी किए गए हैं। कार्यक्रम के आयोजन में एनसीसी के साथ एनजीओ ह्यूमैनिटी फार यू एंड मी का भी सहयोग रहा।

...व्यक्ति के जन्म और मृत्यु की भविष्यवाणी पहले से नहीं की जा सकती

हावड़ा (**सोनी कुमारी झा**) : हावड़ा स्टेशन पर यही घटना घटी। एक बच्चे का जन्म हुआ। दोपहर मे जब महिला यात्री घर लौटने के लिए स्टेशन पर खड़ी थी तभी प्लेटफार्म नंबर 12 पर बच्चे का जन्म हुआ। बच्चे और माँ को हावड़ा जिला अस्पताल के प्रसूति वार्ड में भर्ती कराया गया है। जहाअस्पताल सूत्रों के अनुसार, माँ और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। तब शाम के 5:30 बज रहे थे। सुमित्रा बेसिल (35) नाम की एक महिला अन्य यात्रियों के साथ ट्रेन पकड़ने के लिए हावड़ा स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 12 पर खड़ी थी। उसके साथ उसकी छोटी बेटी भी थी। दोनो कोल्डफील्ड एक्सप्रेस से अंडाल अपने घर लौटने वाली थी। लेकिन जब वह प्लेटफार्म नंबर 12 पर ट्रेन का इंतजार कर रही थी, तभी उसे अचानक प्रसव पीड़ा होने लगी। बेचैनी महसूस होने पर वह प्लेटफार्म पर लेट गई। उसे देखकर स्टेशन पर ड्यूटी पर तैनात आरपीएफ के जवान और जीआरपी के जवान मौके पर पहुँचे। महिला आरपीएफ कर्मियों ने महिला को घेर लिया। उसके चारों ओर कपड़े से एक दीवार बना दी गई। वहां सुमित्रा ने एक बच्चे को जन्म दिया। बाद में जीआरपी की मदद से उसे एंबुलेंस से हावड़ा जिला अस्पताल ले जाया गया। वहां, आनन-फानन में गर्भनाल काटकर बच्चे को अलग किया गया। फिर, दोनों को अस्पताल के प्रसूति वार्ड में ले जाया गया। वहां, उन्हें डॉक्टर यूके घोष की देखरेख में भर्ती कराया गया। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, मां और बच्चा दोनों स्वस्थ और सामान्य हैं। दोनों को निगरानी में रखा गया है। जीआरपी ने उसके पति रमेश बसंल को सूचित कर दिया है। वह भी अस्पताल पहुंचे। हावड़ा स्टेशन पर अन्य रेल यात्री आर पी एफ और जीआरपी का यह मानवीय चेहरा देखकर खुश हुए। उन्होंने पुलिस से कहा कि वे खतरे के समय में इसी तरह उनके साथ रहना चाहते हैं। एक अस्पताल कर्मचारी ने कहा कि मां बच्चे के साथ खेल रही है।

मॉरीशस में पहली बार छठ पूजा का भव्य आयोजन

मॉरीशस : मॉरीशस में बसे प्रवासी भारतीयों द्वारा पहली बार छठ पूजा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। पूर्वांचल कम्युनिटी ग्रुप द्वारा शनिवार को आयोजित बैठक में छठ पूजा के आयोजन से संबंधित सभी विषयों पर विस्तृत चर्चा के बाद सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया और आयोजन की जिम्मेदारियाँ भी निर्धारित की गईं। कम्युनिटी ने घोषणा करते हुए बताया कि मॉरिशस में पहली बार छठ पूजा 2025 का आयोजन बड़े ही पारंपरिक श्रद्धा और उल्लास के साथ किया जाएगा। सूर्य देव और छठी मइया को समर्पित यह पावन पर्व प्रकृति, अनुशासन, शुद्धता और कृतज्ञता का प्रतीक है, जिसे अब मॉरिशस की पावन धरती पर भी उसी भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाएगा।

समाजसेवी ई. आर. के. जायसवाल से बातचीत में कोषाध्यक्ष निशांत शेखर ने बताया कि बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया है कि खरना का आयोजन ब्रिंदावन सार्वजनिक मंदिर, पाल्मा रोड, कात्र बॉर्न में सामूहिक रूप से किया जाएगा, जबकि अर्घ्यदान का आयोजन फ्लिक एन फ्लैक बीच पर किया जाएगा। आगे बताया कि मॉरीशस में बसे भारतीय प्रवासी समुदाय के लिए यह गर्व और आस्था का क्षण है, क्योंकि यह चार दिवसीय पर्व न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक एकता और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का संदेश भी देता है। समुदाय ने सभी श्रद्धालुओं, परिवारों और शुभचिंतकों से इस ऐतिहासिक आयोजन में सहभागी बनने का आग्रह किया है, ताकि इस प्रथम छठ पर्व को एकता, भक्ति और उत्सव का प्रतीक बनाया जा सके। पूर्वांचल कम्युनिटी ग्रुप ने इसे भारतीय संस्कृति के गौरव के रूप में वर्णित किया है, जो न केवल प्रवासी भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़ता है, बल्कि मॉरिशस में प्रकृति के प्रति आस्था और सामुदायिक एकता का सशक्त संदेश भी देता है। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया गया कि समूह में लगभग 100 सक्रिय सदस्य हैं, जो मिलकर अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं को जीवित रखने के लिए कार्यरत हैं। छठ पूजा जैसे प्रमुख पर्वों को पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है तथा ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिनसे नई पीढ़ी अपनी विरासत को समझ सके और उससे जुड़ सके। हमारा मुख्य उद्देश्य हमारी संस्कृति, पारंपरिक रीति-रिवाजों और त्यौहारों का संरक्षण एवं प्रसार करना है। ऐसा करते हुए हम न केवल अपनी जड़ों और पूर्वजों से जुड़े रहते हैं, बल्कि मॉरिशस की समृद्ध बहुसांस्कृतिक समाज में अपनी संस्कृति को गर्व के साथ साझा भी करते हैं।

बैठक में अध्यक्ष मेधा गुजाधुर, उपाध्यक्ष अमृता राज, सचिव डॉ. पी. के. झा, कोषाध्यक्ष बिनीता शेखर और निशांत शेखर उपस्थित रहे।

बीएसएफ की 48वीं इंटर फ्रंटियर फुटबाल ट्राफी पर जम्मू फ्रंटियर ने जमाया कब्जा

कोलकाता : बीएसएफ के दक्षिण बंगाल फ्रंटियर, कोलकाता के तत्वावधान में आयोजित सीमा सुरक्षा बल की 48वीं इंटर फ्रंटियर फुटबाल प्रतियोगिता- 2025 का शनिवार को भव्यता के साथ समापन हो गया। नदिया जिले के कल्याणी स्टेडियम में खेले गए प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में जम्मू फ्रंटियर की टीम ने नार्थ बंगाल फ्रंटियर टीम को कड़े संघर्ष में पेनल्टी शूटआउट में 5-4 गोल से पराजित कर विजेता ट्रॉफी पर कब्जा जमाया। रोमांचक फाइनल मुकाबले में दोनों टीमों ने उत्कृष्ट खेल कौशल, अनुशासन और टीम भावना का प्रदर्शन कर दर्शकों का दिल जीत लिया। सात से 11 अक्टूबर तक आयोजित पांच दिवसीय इस प्रतियोगिता में देशभर से बीएसएफ के 11 फ्रंटियरों की फुटबाल टीमों ने हिस्सा लिया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बीएसएफ की पूर्वी कमान के अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी) महेश कुमार अग्रवाल, आइपीएस उपस्थित थे। इस अवसर पर दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के महानिरीक्षक (आइजी) अनीश प्रसाद, कोलकाता सेक्टर के डीआइजी प्रवीण कुमार सहित बीएसएफ के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, विभिन्न फ्रंटियरों के टीम प्रबंधक, प्रतिभागी खिलाड़ी एवं बड़ी संख्या में स्थानीय दर्शकगण उपस्थित रहे। मैच के समापन पर मुख्य अतिथि बीएसएफ के एडीजी ने विजेता और उपविजेता टीमों को ट्राफी एवं पदक प्रदान किए। इस दौरान खिलाड़ियों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि खेल न केवल शारीरिक दक्षता का प्रतीक है, बल्कि यह अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना को भी सुदृढ़ करते हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन की बीएसएफ की यह परंपरा बल की एकजुटता को सशक्त करती है और देश के युवाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। समापन अवसर पर बीएसएफ की सांस्कृतिक टीम ने देशभक्ति से ओतप्रोत मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, जिससे पूरा माहौल राष्ट्रप्रेम और उत्सव के रंग में रंग गया। बीएसएफ ने एक बयान में कहा कि इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि खेल के माध्यम से न केवल शारीरिक क्षमता का विकास होता है।

आमता खोसलपुर में 10 मुखी माँ योगेश्वरी की पूजा होती है काली के रूप में देवी का दुर्लभ दर्शन

हावड़ा (**संजय कुमार सिंह**) : आप देखने जाते है मां श्यामा को लेकिन वास्तव में वह मां काली के रूप मे देखने को मिलती है।देवी के इस दुर्लभ रूप की पूजा अमता नदी के उस पार खोसलपुर गाँव में की जाती है। मां के शरीर का रंग नीला है, मुख से जीभ बाहर है, लेकिन एक नहीं - दस सिर, दस हाथ और दस पैरों वाली मां काली की भव्य प्रतिमा है और चरणों में महादेव है। एक विचित्र, अतुलनीय रूप - एक अनूठा संयोग जिसमें भय और भक्ति, शक्ति और भक्ति का संगम है। गाँव के बुजुर्गों ने बताया कि इस मूर्ति की स्थापना उस क्षेत्र के एक धनी व्यक्ति जगन्नाथ ने गुरु श्रीमति चिदानंद हंसाचारी महाराज के मार्गदर्शन में हुई थी। गुरुदेव ने देवी की इस अद्भुत मूर्ति की स्थापना की और तभी से देवी की पूजा शुरू हुई।

पूरे बंगाल में जहाँ भी दिवाली का महापर्व मनाया जाता है, वहाँ काली पूजा होती है, वहीं खोसलपुर में पुजा होती है बंगाली नव वर्ष के पहले दिन देवी की विशेष पूजा की जाती है - देवी माँ की पूजा बड़े धूमधाम से शुरू होती है। लेकिन अमावस्या की रातों में, ग्रामीण मंदिर परिसर में इकट्ठा होते हैं, धूपबत्ती, दीप जलाते हैं और माँ का नाम स्मरण करते हुए पुजा करते हैं। एक ग्रामीण का कहना है कि जब मैं छोटा था, तब मैंने मिट्टी के मंदिर में देवी माँ की पूजा होते देखी थी। अब गाँव के सभी लोग मिलकर पक्का मंदिर बनाये हैं। माँ बहुत जागृति हैं - माँ में आस्था रखने वालों का मंगल होता है । मंदिर में प्रतिदिन सुबह और शाम देवी की नियमित पूजा की जाती है। विशेष दिनों में, मंदिर परिसर में कीर्तन और यज्ञ किया जाता है। भक्तों के अनुसार, माँ का रूप जितना सुंदर है, उतना ही अद्भुत भी है। कई लोग कहते हैं, 'माँ भक्तों की इच्छा के अनुसार रूप धारण करती हैं।' माँ योगेश्वरी का यह दसमुखी रूप बंगाली पवित्र साधना परंपरा का एक अनूठा उदाहरण है, जहाँ काली, दुर्गा और चंडीर की शक्तियाँ देवी के रूप में एक साथ देखने को मिलता हैं। आज भी, पार खोसलपुर में दिवाली या नववर्ष की पूजा के दौरान भक्तो की भीड़ देखने को मीलती है। भक्त कहते हैं - 'जहाँ भी आप सोचते हैं, वहाँ ईश्वर है।' और इस प्रकार योगेश्वरी माँ स्वयं प्रकट होती हैं।'

धक-धक गर्ल की वो फिल्में जिसने बनाया लोगों को उनका दीवाना

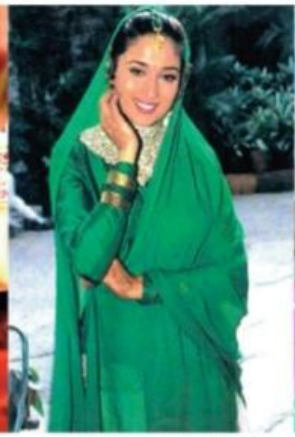

नई दिल्ली : बॉलीवुड की 'धक-धक गर्ल' माधुरी दीक्षित आज अपना 58वां जन्मदिन मना रही हैं। अभिनय, सौंदर्य और नृत्य में माहिर माधुरी दीक्षित ने हिंदी सिनेमा में एक अमिट छाप छोड़ी है। साल 1984 में फिल्म 'अबोध' से अपने करियर की शुरुआत करने वाली माधुरी ने 90 के दशक में जबरदस्त स्टारडम हासिल किया। आज उनके जन्मदिन पर आइए जानते हैं उनके कुछ ऐसे महिला-केंद्रित दमदार किरदारों के बारे में, जो न सिर्फ उनकी अभिनय क्षमता को दर्शाते हैं, बल्कि भारतीय सिनेमा में महिला पात्रों को एक नई पहचान भी दिलाते हैं।

मोहिनी- तेजाब (1988)

एन. चंद्रा निर्देशित इस सुपरहिट फिल्म में माधुरी दीक्षित ने मोहिनी का किरदार निभाया। एक डांसर मोहिनी और मुन्ना (अनिल कपूर) की प्रेम कहानी दर्शकों को बहुत पसंद आई। इस फिल्म के गाने 'एक दो तीन' ने उन्हें रातों-रात सुपरस्टार बना दिया। इस फिल्म के लिए उन्हें पहली बार फिल्मफेयर बेस्ट एक्ट्रेस का न?मिनेशन मिला। फिल्म सिनेमाघरों में 50 हफ्तों तक चली थी।

पूजा- साजन (1991)

लॉरेंस डिसूज़ा की रोमांटिक ड्रामा 'साजन' में माधुरी ने पूजा का किरदार निभाया। सलमान खान और संजय दत्त के साथ उनकी केमिस्ट्री दर्शकों को खूब भायी। इस फिल्म में भी उन्हें बेस्ट एक्ट्रेस का फिल्मफेयर नॉमिनेशन मिला। फिल्म में उनकी एक्टिंग ने लोगों का दिल जीत लिया था। यही नहीं फिल्म के गाने आज भी लोग सुनते हैं।

सरस्वती- बेटा (1992)

इंद्र कुमार द्वारा निर्देशित इस फिल्म में माधुरी ने आदर्श बहू और समझदार पत्नी का किरदार निभाया। अनिल कपूर के साथ उनकी जोड़ी ने खूब सराहना पाई। अरुणा ईरानी के साथ उनकी सास-बहू की नोकझोंक यादगार रही। फिल्म 1992 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में से एक बनी और माधुरी को फिल्मफेयर बेस्ट एक्ट्रेस अवॉर्ड मिला।

गंगोत्री- खलनायक (1993)

सुभाष घई के निर्देशन में बनी 'खलनायक' में माधुरी ने एक निडर पुलिस ऑफिसर का किरदार निभाया। जैकी श्रॉफ और संजय दत्त के साथ उनका अभिनय दमदार रहा। फिल्म 1993 की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में से एक बनी।इस फिल्म में भी उन्हें फिल्मफेयर बेस्ट एक्ट्रेस के लिए न?मिनेट किया गया।

निशा- हम आपके हैं कौन (1994)

राजश्री प्रोडक्शन की इस पारिवारिक फिल्म में माधुरी ने एक चुलबुली, प्यारी और जिम्मेदार लड़की निशा का किरदार निभाया। सलमान खान के साथ उनकी जोड़ी को दर्शकों ने काफी पसंद किया। फिल्म ने कई रिकॉर्ड तोड़े और 5 फिल्मफेयर अवॉर्ड जीते। माधुरी को इस फिल्म के लिए बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड भी मिला था।

पूजा- दिल तो पागल है (1997)

यश चोपड़ा की इस म्यूजिकल लव स्टोरी में माधुरी एक समर्पित डांसर पूजा के रोल में थीं। शाहरुख खान और करिश्मा कपूर के साथ उनकी परफॉर्मेंस और भी खूबसूरत नजर आई। इस फिल्म को 8 फिल्मफेयर अवॉर्ड से नवाजा गया था और यही नहीं माधुरी दीक्षित को भी बेस्ट एक्ट्रेस का पुरस्कार मिला था।

चंद्रमुखी- देवदास (2002)

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित इस भव्य फिल्म में माधुरी ने तवायफ चंद्रमुखी का किरदार निभाया।शाहरुख खान (देवदास) और ऐश्वर्यराय (पारो) के साथ उनकी त्रिकोणीय प्रेमकहानी बेहद प्रभावशाली रही। फिल्म को 11 फिल्मफेयर अवॉर्ड और 5 राष्ट्रीय पुरस्कार मिले।

नारी के विश्वास, समर्पण व प्रेम को समर्पित है 'करवा चौथ'

भारतीय संस्कृति में रिश्तों की पवित्रता और भावनाओं की कोमलता को संजोने वाले अनेक पर्व हैं, उन्हीं में से एक है करवा चौथ।

यह न केवल नारी के विश्वास, समर्पण व प्रेम की गाथा सुनाता है, बल्कि इन्हें बारीकी से उजागर भी करता है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को जब सूरज ढलने लगता है और आसमान में चांद की प्रतीक्षा होने लगती है, तब स्त्री का हृदय भी एक मौन तपस्विनी की तरह अपने प्रियतम की लंबी उम्र व सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना करता है। इस दिन वह सुबह से ही उपवास का संकल्प लेती है-

न अन्न, न जल, केवल अपने विश्वास व प्रेम के बल पर।

करवा, यानी मिट्टी का छोटा घड़ा, जो संजोए रखता है जल। मानो जीवन की अमरता का प्रतीक। चौथ यानी चतुर्थ तिथि। जब स्त्री करवे के समक्ष दीपक जलाकर कथा सुनती है, तो ऐसा लगता है मानो वह अपने छोटे से संसार में प्रकाश भर रही हो।

संध्या के समय स्त्रियां सोलह श्रृंगार से सजी, हाथों में मेहंदी और आंखों में चंद्रमा की प्रतीक्षा का उजाला लिए बैठी होती हैं। कथा के स्वर और शब्द वातावरण को गुंजाते हैं और फिर आता है वह क्षण- जब आसमान में चांद दिखता है।

छलनी से पहले चांद को देखना और फिर उसी छलनी से पति के मुख को निहारना, यह दृश्य केवल एक रस्म नहीं, बल्कि भावनाओं की कविता है, जहां चंद्रमा साक्षी होता है उनके प्रेम का और पति बन जाता है जीवन के हर संघर्ष का संबल।

आज के बदलते समय में करवा चौथ व्रत केवल स्त्री के त्याग की कहानी नहीं रह गया है। कई जगह पति भी यह व्रत रखकर अपने प्रेम की बराबरी जताते हैं। इस तरह यह पर्व दांपत्य जीवन की गहराई, आपसी सम्मान और परिवार की एकता का प्रतीक बन चुका है। वास्तव में करवा चौथ एक साधना है, जहां स्त्री अपने भीतर की शक्ति को पहचानती है और अपने प्रेम को चंद्रमा की शीतलता सा अमर बना देती है।

करवा चौथ की कथा

करवा चौथ पर महिलाएं दिन भर निर्जल रहने के बाद रात को चंद्रमा को अर्घ देकर ही भोजन करती हैं। इस बीच दोपहर बाद करवा चौथ की पौराणिक कथा सुनती हैं, जो इस प्रकार कही जाती है :

महाभारत काल में, जब अर्जुन नीलगिरि पर्वत पर तपस्या करने गए और देर तक लौटे नहीं, तो द्रौपदी चिंता में डूब गई। उन्होंने भगवान श्री कृष्ण को याद किया। श्री कृष्ण के दर्शन देने पर द्रौपदी ने पति अर्जुन की दीर्घायु और सभी कष्टों के दूर होने की कामना की। श्री कृष्ण ने कहा कि पार्वती ने भी भगवान शंकर से इसी प्रकार प्रश्न किया था और शंकर जी ने एक कथा सुनाई थी, जो वह अब द्रौपदी को बताएंगे :

भगवान शंकर ने कहा कि कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि, जिसे करवा चौथ कहते हैं, को निर्जला व्रत करके यह कथा सुनी जाती है - स्वर्ग से सुंदर, रत्नों से शोभायमान शुक्रप्रस्थ नामक नगर (जो अब दिल्ली है) में वेद शर्मा नामक विद्वान ब्राह्मण रहता था। उसकी 7 बहादुर पुत्रियां थीं, जिनमें से वीरवति नामक कन्या का विवाह सुदर्शन नामक ब्राह्मण से हुआ था।

करवा चौथ के दिन वीरवति ने भी अपने ससुराल में व्रत रखा और दोपहर में कथा सुनी। दोपहर बाद भूख और प्यास से वह व्याकुल हो गई। उसकी भौजाइयों ने अपने पतियों से यह बात कही, तो भाइयों ने बहन की पीड़ा देख जंगल में आग जला कर कपड़ा तान कर नकली चंद्रमा जैसा दृश्य बनाया।

बहन ने नकली चंद्रमा को अर्घ दिया और भोजन किया, परंतु व्रत खंडित हो गया। जब वह ससुराल लौटी तो पति गंभीर रूप से बीमार और बेहोश पड़ा था। उसने साल भर उसकी सेवा की।

अगले वर्ष, जब इंद्रलोक से इंद्र की पत्नी इंद्राणी पृथ्वी पर करवा चौथ व्रत करने आईं, तो उसने वीरवति से उसके दुख का कारण पूछा।

पता चला कि पिछले वर्ष व्रत खंडित हो गया था। इंद्राणी ने कहा कि इस बार पूर्ण विधि से व्रत कर, तब पति ठीक होगा। वीरवति ने विधिपूर्वक व्रत किया और पति स्वस्थ हो गया।

श्री कृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि वह भी यह व्रत विधिपूर्वक करें, तब सब ठीक हो जाएगा। द्रौपदी ने ऐसा किया, अर्जुन सही-सलामत लौटे, राज्य वापस मिला। श्री कृष्ण ने कहा कि विश्वास न करने या व्रत खंडित करने से पति को दुख होता है। कहा जाता है कि महाभारत काल से ही करवा चौथ का व्रत प्रचलित है।

एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार, देवताओं और दैत्यों के बीच युद्ध हुआ। देवताओं की हार होने लगी। वे ब्रह्मा जी के पास गए और विजय का उपाय पूछा।

ब्रह्मा जी ने कहा कि पत्नियों को कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को पूर्ण विधि से निर्जल व्रत रखना चाहिए, दिन में गणेश पूजा करनी चाहिए, रात में चंद्रमा को अर्घ देना चाहिए। इससे पत्नियों का सुहाग अटल रहता है और पति दीर्घायु होते हैं। देव-स्त्रियों ने व्रत किया और युद्ध में विजय मिली।

इस प्रकार करवा चौथ का व्रत पति की रक्षा, दीर्घायु और सौभाग्य के लिए प्रचलित हुआ। यह व्रत केवल विवाहित स्त्रियों का पर्व नहीं, बल्कि कुंवारी कन्याएं भी इसे कर गौरी पूजन कर शिव जी जैसा वर पाने की कामना करती हैं।

स्वत्वाधिकारी **'बात हिन्दुस्तान की'** (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन न.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-**वैद्यनाथ झा,** फोन- 9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com

(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Baidyanath Jha** Mo. 9798848926, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)